

---

## इकाई 5 विभिन्न क्षेत्रों में आरंभिक कृषि\*

---

### इकाई की रूपरेखा

- 5.1 उद्देश्य
- 5.2 प्रस्तावना
- 5.3 पश्चिमी एशिया में कृषि का आरंभ
  - 5.3.1 बीधा और जेरिको
  - 5.3.2 ईरान और इराक में ज़ाग्रेस पर्वत
- 5.4 अनातोलिया और यूरोप से प्राप्त साक्ष्य
- 5.5 मेसोअमेरिका और चीन
- 5.6 सारांश
- 5.7 शब्दावली
- 5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
- 5.9 संदर्भ ग्रंथ
- 5.10 शैक्षणिक वीडियो

---

### 5.1 उद्देश्य

---

इस इकाई में हम कृषि के आरंभ और विश्व के विभिन्न भागों में आरंभिक कृषि प्रणाली के बारे में चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- उन क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे जहां आरंभिक कृषि का आविर्भाव हुआ,
- उन कारकों की व्याख्या कर पाएंगे जिनके कारण अलग-अलग क्षेत्रों में कृषि की प्रकृति में विविधता आई, और
- भोजन खोजने और घुमंतुपन के साथ-साथ कृषि विकास के महत्व को समझ सकेंगे।

---

### 5.2 प्रस्तावना

---

कृषि और पशुपालन की ओर परागमन मानव समुदायों के सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थापन के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। मानव जीवन में कृषि से क्रांतिकारी परिवर्तन आया क्योंकि अब उनके पास बढ़ती हुई मांग की पूर्ति और आपातकालीन समय में उपयोग के लिए भंडारण की अतिरिक्त संभावना थी। हालांकि, शिकार-संग्रहण और भ्रमणशील जीवनशैली पूर्ण रूप से त्यागी नहीं गई थी, और विश्व के कई भागों में यह समाज के जीवन निर्वाह की आवश्यकताओं की पूर्ति करती रही। अनेक विद्वानों में कृषि के आरंभ की व्याख्या नवपाषाण काल की क्रांति के रूप में प्रस्तुत करने पर विवाद है, विशेषकर जब इसका प्रयोग आकस्मिक और अप्रत्याशित परिवर्तन का वर्णन करने के लिए किया गया था। हालांकि, जीवन निर्वाह के अस्तित्व और बसावट के प्रतिरूप पर प्रभाव के रूप में कृषि के क्रांतिकारी महत्व पर व्यापक समर्थन है।

विश्व के विभिन्न भागों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों ने पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों की एक विस्तृत श्रेणी स्थापित की है, जैसे विश्व के तापमान में वृद्धि और इसका वनस्पति और जीव जंतुओं पर व्यापक प्रभाव और बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अनेक खाद्य स्रोतों जैसे घोंघा, केकड़ा, सीपी और मछली आदि का दोहन करने की अंतर्निहित क्षमता में वृद्धि हुई। ऐसे ही एक प्रसंग में, कैंट फ्लेनरी (1973: 276) ने अनुभव किया कि जंगली अनाज की बाली उसे उगाने और तैयार करने में लगने वाले परिश्रम के बावजूद स्वादिष्ट लगती होगी। कुछ विशेष पौधे और जानवरों का इस तरह कुशलतापूर्वक प्रयोग किया गया कि वे मानव समाज के लिए दीर्घकालिक आधार पर उपयोगी बन गए। इस प्रसंग में विशेषकर कृषि के आरंभ को एक अपरिवर्तनीय घटना के रूप में देखा गया। आरंभिक कृषि की प्रकृति और समय निर्धारण में क्षेत्रीय विविधता थी। आरंभिक कृषि स्थलों की भौगोलिक स्थिति, जलवायु और पर्यावरण के कारण ही आरंभिक कृषि में यह विविधता महसूस की गई। इस इकाई में हम, आरंभिक कृषि की प्रकृति में क्षेत्रीय विविधता के साथ-साथ व्यापक सांस्कृतिक समानताओं का इन दोनों क्षेत्र विशेषज्ञों द्वारा किए गए शोध की छान-बीन करेंगे। एक इकाई में विश्व के सभी क्षेत्रों का अध्ययन कर पाना संभव नहीं है, इसलिए हमने उदाहरण के तौर पर पश्चिमी एशिया, यूरोप, मेसोअमेरिका तथा चीन का अध्ययन यहां प्रस्तुत किया है।

### 5.3 पश्चिमी एशिया में कृषि का आरंभ

पुरातत्ववेत्ताओं और अन्य विशेषज्ञों का ध्यान तथा शोध पश्चिमी एशिया पर काफी केंद्रित रहा जो आरंभिक कृषि को समझने के लिए पर्याप्त जानकारी उपलब्ध कराता है। गॉर्डन चाइल्ड, रॉबर्ट ब्रेडवुड, लुईस बिनफोर्ड, कैंट फ्लेनरी, ऐंथनी मूर और ओफार बार-योसफ समेत अन्य बहुत से विद्वान आरंभिक कृषि पर विभिन्न परिप्रेक्ष्य से बहस कर चुके हैं। उनके विचारों में भेद होने के बावजूद, जैसा कि **इकाई 4** में देखा गया, कि इन सभी विद्वानों के शोधों ने आरंभिक अधिवासियों द्वारा भूपरिदृश्य को मानव के रहने लायक बनाने में उल्लेखनीय प्रगति के रूप में इस क्षेत्र की प्रचुर समृद्धि पर प्रकाश डाला है। भूवैज्ञानिक जेम्स हैनरी ब्रेस्टेड ने इस क्षेत्र को 'उपजाऊ अर्धचंद्र' (Fertile Crescent) कहा – जो यहां आरंभिक कृषकों की कृषि उत्पादन के विशिष्ट केन्द्रों की प्राकृतिक प्रवृत्ति की ओर संकेत देता है।

जैसा कि हमने पिछली इकाई में देखा, अभिनूतन युग के अंत में, लगभग 11,700 बी सी ई और उसके पश्चात् अभिनव युग के आरंभ में पश्चिमी एशिया में शिकारी-संग्रहकर्ताओं का जीवन जलवायु के उतार-चढ़ाव द्वारा प्रभावित हुआ। पश्चिमी एशिया के गहरे समुद्र केन्द्रों, ऊपरी तलछट और झीलों से प्राप्त पराग के कणों से प्राप्त साक्ष्य दर्शाते हैं कि अभिनूतन युग के अंतिम भाग की जलवायु ठंडी और शुष्क थी। अभिनूतन युग के अंत के तुरंत पश्चात् तापमान और वर्षा में वृद्धि के बाद लगभग 9000 बी सी ई के दौरान शुष्कता अर्थात् सूखे में वृद्धि हुई। तब भी, अभिनव युग के आरंभ के समय, जलवायु ठंडी और आर्द्र थी। ये परिस्थितियां विशेषकर मानव के बसने के लिए उपयुक्त थीं। वर्षा में वृद्धि के कारण पूर्वी भूमध्यसागरीय क्षेत्र के तटीय पर्वतों के आसपास वन क्षेत्र में विस्तार हुआ। आधुनिक तुर्की, सीरिया, इजराइल, इराक और ईरान के पर्वतों और निचली पहाड़ियों को सर्दियों में पर्याप्त मात्रा में वर्षा (वर्ष में 20 इंच से अधिक) प्राप्त हुई। इससे आगे के घास के मैदान पौधों और जानवरों की प्रजाति दोनों ही में समृद्धि थी। उदाहरण के लिए, लेवांट का क्षेत्र (Levant) दो प्रकार के जंगली गेहूँ (एनकॉर्न और एम्मर) और जौ के लिए उपयुक्त था।

भेड़ और बकरी के जंगली पूर्वज पहाड़ी भूभाग में बसते थे। 11,000 बी सी ई के आसपास उत्तर केबारन काल के दौरान यहां पशुओं के चराने के साक्ष्य मिलते हैं। उसके शीघ्र पश्चात्, जॉर्डन घाटी (विशेषकर वादी-एन-नतूफ) में मध्यपाषाण युग के नेतुफियन समुदाय ने यहां काफी हद तक जीवन निर्वाह का आधार विकसित किया। उन्होंने जंगली मृग, भेड़ और बकरी

के मध्य-ग्रीष्मकाल में घास की खोज में ऊपरी पहाड़ियों की ओर प्रवासी परागमन का अनुसरण किया। उन्होंने तटीय जल ससाधनों का दोहन किया और क्षेत्र की नवीन-निर्मित झीलों में मछली पकड़ने का कार्य किया। उन्नत घुमंतुओं ने वहां पाए जाने वाले जंगली अनाजों और पौधों को भी एकत्रित किया।

केबारन काल (13,000-11,000 बी सी ई) का नाम जॉर्डन घाटी की कबारा गुफा स्थल के नाम पर रखा गया है। यह काल अनुपुरापाषाण काल के रूप में पहचाना गया, अर्थात् यह वह काल है जो पुरापाषाण काल के बाद और मध्यपाषाण काल के पूर्व का काल है।

नेतुफियन पश्चिमी एशिया के मध्यपाषाण काल की संस्कृति से सम्बंधित हैं। इनका नाम जॉर्डन घाटी क्षेत्र की वादी-एन-नतूफ स्थल के ऊपर रखा गया। ये क्षेत्र के अपेक्षाकृत अधिक स्थायी रूप से बसे समूहों में प्रथम थे जिन्होंने नियमित तरीके से जंगली अनाजों की बालियों को जमा करने तथा पशुपालन के साथ नए औजारों जैसे पत्थर का हँसिया और पीसनेकूटने वाले उपकरण, जैसे ओखली और मूसली, का प्रयोग भी किया।

नेतुफियन उस समय प्रचलित खाद्य संग्रहण के कौशल में इतने निपुण थे कि उसने उन्हें एक विशेष स्थान पर लम्बे समय तक टिके रहने के योग्य बनाया और उस समय प्रचलित उनकी घुमंतु गतिविधियों को कम किया। 10,500 बी सी ई के सांस्कृतिक दस्तावेजों में औजार, जैसे छोटी बर्छी, लघुपाषाण औजार और मछली पकड़ने के हुक आदि कुल्हाड़ियों और हँसियों के साथ-साथ मिले जो कि अधिक स्थायी बसावट वाली जीवनशैली की प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। हँसिए पर अनाज की बाली से प्राप्त हुए सिलिका के कणों की जमावट के कारण चमक, यह इस तथ्य की पुष्टि करती है कि उन्होंने पौधों की खेती करनी शुरू कर दी थी। उन्होंने एक स्थान पर बसने की जीवनशैली को और अधिक बढ़ाने के लिए अन्य टिकाऊ भोजन जैसे बाँजफल (बलूत का फल; oaknut) की ओर भी रुख किया होगा। नेतुफियन स्थलों से प्राप्त औजार जैसे ओखली और मूसली, पौधों पर उगने वाली फसल पर उनकी अधिक निर्भरता की पुष्टि करते हैं। जैसे-जैसे आगे तापमान में वृद्धि हुई और यह 8000 बी सी ई के आसपास दक्षिणी लेवांट में बढ़कर और अधिक गर्म हो जाता है, तो वहां वन आवरण और वर्षा में कमी आई जिसने नेतुफियनों को जानवरों के लेबानान और सीरिया की ओर प्रवास का अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया होगा। बहुत से नेतुफियन स्थलों को त्याग दिया गया था, और बाद में कुछ स्थलों, जैसे जेरिको, में फिर से बसावट हुई और जिसे आरंभिक कृषि बसावट के रूप में पुरातात्विक मान्यता मिली।

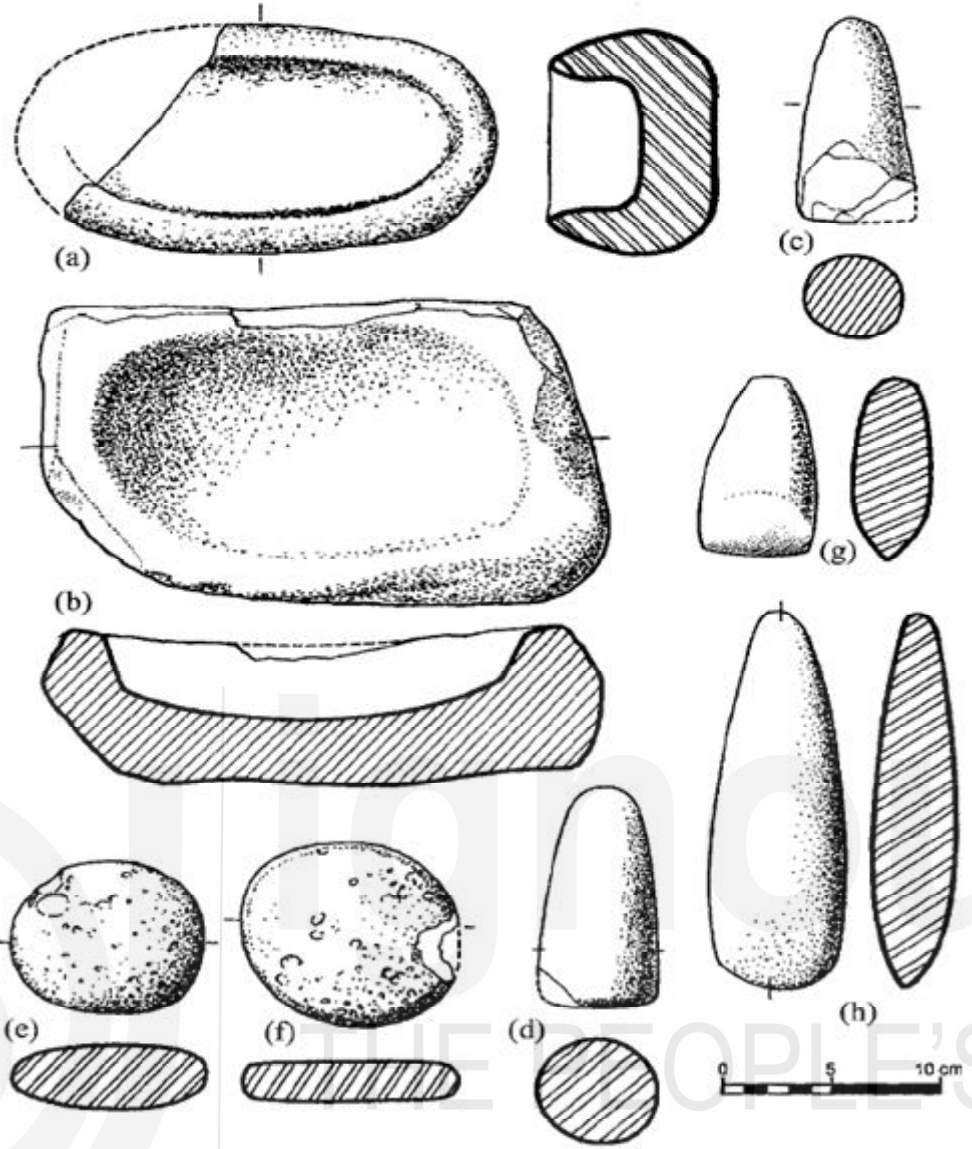
अब यह बहुत अच्छी तरह स्थापित हो गया है कि सिर्फ जलवायु परिवर्तन ने ही कृषि को प्रेरित नहीं किया। बड़े जनसमुदाय की आजीविका के पोषण के लिए तथा यह तथ्य कि आरंभिक कृषि गहन श्रम वाली थी और तभी की जा सकती थी जब कार्य करने के लिए अधिक हाथ उपलब्ध हों, जिसने समुदायों को कृषि द्वारा अधिक अभ्रमणशील अस्तित्व की ओर खींचा। इस प्रकार, लगभग 8500 बी सी ई के बाद, जब नेतुफियन अधिक अनुकूल वातावरण वाले क्षेत्रों की ओर पलायन कर गए, वहां समुदायों को उपयुक्त प्रोत्साहन मिला जिससे वे प्रकृति की ओर से उपलब्ध अच्छे भूभागों की खोज कर सकते थे, विशेषकर नए पालतू बनाए गए पशुओं के लिए पानी और चारागाही भूमि। आरंभिक गांव निचली यूफ्रेट्स के बजाय ऊपरी यूफ्रेट्स की तरफ सिमटे हुए थे जहां कृषि सिंचाई, और बाद में कई हजार साल में शहरीकरण की प्रक्रिया देखी गई। नवपाषाण गांव जैसे तैल मुरेबित, जो सीरिया में मध्य यूफ्रेट्स स्थित एक स्थल (लगभग 8000-7600 बी सी ई) है, विशेषकर अधिक वर्षा और चारागाह की उपलब्धता के कारणवश ही अस्तित्व में आया। परिवर्तन की प्रक्रिया के पूर्ववर्ती काल में संसाधनों की उपलब्धता और जनसंख्या द्वारा उसके दोहन करने की आवश्यकता के बीच असंतुलन की लगातार उत्तरोत्तर बढ़ती हुई गति के कारण भोजन प्राप्ति के कौशल और नए तरीकों को बढ़ावा मिला। जानवरों को और अच्छे तरीके से नियंत्रित किया गया और पौधों को उगाने में और अधिक व्यवस्थित पद्धति को अपनाया गया।

### 5.3.1 बीघा और जेरिको

जैसा कि पहले भी बताया गया है कि, आरंभिक नवपाषाण गांव उन क्षेत्रों के पास स्थापित हुए जहां पानी, कृषि योग्य भूमि और चारागाह थे। जॉर्डन स्थित बीघा में नेतुफियन स्तर पर *कापरा* (बकरी की एक प्रजाति) को कुल जीव-जंतु समूह का 76% मानते हैं। यह दर्शाता है कि *कापरा* सबसे अधिक शिकार की जाने वाली प्रजाति थी। बाद में नवपाषाण काल में 7500-6200 बी सी ई में यहां बाह्याकृति, प्रजनन और पशुओं की जीवन पद्धति में परिवर्तन के संकेत मिलते हैं जिसकी पुष्टि जीन समूह और जीवाश्म अवशेषों के अध्ययन से होती है, जो इंगित करता है कि पशुओं के झुंडों की देखरेख पर आधारित सफल पशुचारी अर्थव्यवस्था ने पशुओं को पालतू बनाए जाने वाली अर्थव्यवस्था की जगह ले ली। आरंभिक नवपाषाण स्तरों में उच्च गुणवत्ता वाली प्रोटीनयुक्त सब्जियों के स्रोत जैसे मटर, दालें और अन्य फलीदार पौधे भी उपस्थित थे। बीघा में अल्पविकसित प्रारंभिक सिचाई तकनीकी जानकारी के साक्ष्य और मूसलियों (pestles) और पत्थर के अन्य बर्तनों का प्रयोग यह प्रदर्शित करता है कि इसने कृषि को आगे बढ़ाया।

जॉर्डन घाटी क्षेत्र में जेरिको (वर्तमान में फिलिस्तीन में) सदाबहार झरने के पास था, अतः यह बढ़ती हुई कृषि बस्ती के लिए पानी का महत्वपूर्ण स्रोत था। मध्य-बीसवीं सदी में पुरातात्विक खुदाईयां मुख्य रूप से कैथलीन केन्यॉन (1959) द्वारा की गईं जिसने दर्शाया कि वहां बसावट में मध्यपाषाण काल से आरंभिक कृषि चरण तक, जो लगभग 10000 बी सी ई के बाद, यहां एक निरंतरता देखने को मिलती है। जेरिको के निचले स्तरीकृत खुदाई-क्षेत्र में उनके द्वारा मिट्टी के बर्तनों के प्रयोग के साक्ष्य नहीं मिलते। इस पूर्व-मृदभांड-नवपाषाण ए (PPNA) अवस्था (लगभग 8300-7300 बी सी ई) में उगने वाले गेहूँ और जौ मूल रूप से इस प्रदेश के नहीं थे। इन बालियों के बीज संभवतः जॉर्डन घाटी से लाए गए थे। हालांकि, जल्दी ही यहां इन बालियों की खेती में आरंभिक प्रयासों के बाद, आरंभिक कृषकों ने पर्यावरण का दोहन कुछ इस प्रकार किया कि वे अधिशेष खाद्य उत्पादन करने के योग्य हो गए। मृग, सुअर और जंगली गाय-बैल जानवर पी पी एन ए आरंभिक स्तर के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। इस अवस्था में जानवरों को पालतू बनाए जाने के कोई साक्ष्य नहीं मिलते। जेरिको से जो साक्ष्य मिलता है वह महत्वपूर्ण ढंग से यह तथ्य स्थापित करता है कि विशेषीकृत शिकार ने जानवरों को पालतू बनाने की प्रक्रिया को तो प्रोत्साहित किया, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि हर शिकार करने वाली अर्थव्यवस्था (इस संदर्भ में मृग शिकार अर्थव्यवस्था) शिकार किए जाने वाले जानवरों को आवश्यक रूप से पालतू बनाने की ओर बढ़ाती। जेरिको में मृग की बजाए भेड़ और बकरी को चुना गया था। यह कुछ इच्छित लक्षणों (जैसे बालों वाला शरीर) अथवा उन पशुओं की खाने की आदतों के कारण हो सकता है। मृग का एक विशेष प्रकार का आहार और सीमित वास स्थान होता है, जो उसे पालतू बनाए जाने के लिए अयोग्य बनाता है।

जेरिको में प्रारंभिक कृषि काल में कृषि पर अधिक आश्रयता के कारण मध्यपाषाण औज़ार जैसे लघुपाषाण औज़ार और हड्डी से बनी बर्छी धीरे-धीरे समाप्त हो गए और इनकी जगह काटने, खोदने वाली छड़ी, एक सामान्य किस्म के पीसने और कूटने वाले उपकरणों द्वारा प्रतिस्थापित हो गए। हर प्रकार के फलक जिसमें हँसिए के स्पष्ट दांतेदार फलक और अच्छी तरह बनाए गए तीर अनुपात में छोटे थे और उस समय लघुपाषाण औज़ारों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आया। अनुवर्ती पूर्व पॉटरी-मृदभांड-नवपाषाण ए चरण में, जो एक समय अंतराल (लगभग 9250-8350 बी सी ई) के पश्चात् अस्तित्व में आया जब वहां बसावट में कमी आई थी, तब वहां लघुपाषाण औज़ारों की प्रकृति में गुणात्मक बदलाव आया। अपेक्षाकृत नए औज़ारों की श्रेणी में पीसने वाले उपकरण जैसे ओखली, मूसली, चक्की, साथ ही हथौड़े का पत्थर और चमकाने (पॉलिश) के पत्थरों का मिलना निश्चित रूप से कृषि अर्थव्यवस्था पर अधिक आश्रित होने का संकेत देता है।



चित्र 5.1: जेरिको सहित दक्षिणी लेवांट के पूर्व मृदभांड-नवपाषाण बी (PPNB) से प्राप्त पीसने वाले और पत्थर के पालिश किए हुए उपकरण (a और b); पीसने वाले पत्थर; (c और d) ओखली; (e और f) हाथ के पत्थर; (g और h) घिसाई और पॉलिश की हुई कुल्हाड़ी  
साम्भार: क्यीत, इयान और मॉरिस, एड्रियन-नीजेल गोरिंग, (2002): 'फार्मिंग एंड सोशल कॉम्प्लेक्सिटी इन द प्री-पॉटरी निओलिथिक ऑफ द सदरन लेवांट: ए रिव्यू, एंड सिन्थसिस' *जर्नल ऑफ वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री*, भाग 16 (4). पृ. 361-440.

स्रोत: [https://www.researchgate.net/figure/Ground-and-polish-stone-tools-from-the-Early-Middle-and-Late-Pre-Pottery-Neolithic-B\\_fig12\\_227138426](https://www.researchgate.net/figure/Ground-and-polish-stone-tools-from-the-Early-Middle-and-Late-Pre-Pottery-Neolithic-B_fig12_227138426)

बदलती हुई आवासीय स्थापत्य कला में यह समझना आसान है कि कृषि आवासीय परियोजना से जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हुई। पी पी एन ए अवस्था में घर गोल अथवा वक्रिय थे और बाद में पी पी एन बी अवस्था (लगभग 7300-6000 बी सी ई) में आयताकार योजना में बनाए गए थे। स्थापत्य शैली में परिवर्तन जीवन पद्धति में बदलाव के साथ-साथ जनसंख्या में वृद्धि दोनों की ओर संकेत देता है। आरंभिक काल के गोलाकार घर हल्के सामान से बने थे और आसानी के साथ ले जाए जा सकते थे। आयताकार घरों में मिट्टी के पलस्तर के साथ ईंटों से बना चबूतरा भी था। आयताकार ढांचे में कमरे जोड़े जा सकते थे और इसलिए, ये घर जनसंख्या में वृद्धि के साथ व्यापक स्तर पर अभ्रमणशीलता का भी संकेत देते हैं। दिलचस्प बात यह है कि 1950 में कैथलीन केन्यॉन द्वारा खुदाई के दौरान यहां, तेरह फुट की गहराई पर, गोलाकार घरों के बिल्कुल नीचे, गाद की एक मोटी सतह (deposit) भी प्राप्त हुई।

यह सतह बहुत सी सतहों के ऊपर तले होने से बनी थी जो ठोस दीवार से तो संयुक्त नहीं थी लेकिन मिट्टी के टीलों से झोपड़ी जैसे आवास के फर्श की तरह लगता है। अतः इस प्रकार की सतहों को बनाने के लिए समय की एक लम्बी अवधि की ज़रूरत होती है, जो दर्शाती है कि समुदाय सदाबहार झरनों के पास स्थाई रूप से कमोबेश रह रहे थे परंतु ये निवास स्थान पर, जो खानाबदोशों के रहने के लिए अधिक उपयुक्त थे और बाद में वे और अधिक स्थाई निवास स्थानों की ओर चले गए (केन्थॉन, 1959: 40)।

चट्टान से काटी हुई एक 9 फुट गहरी और 10 फुट चौड़ी खाई मिली है जिसमें बुर्जों के साथ पत्थर की दीवार से अच्छी तरह बाड़ बनाई गई थी। हालांकि दीवार बनाने का असली कारण स्पष्ट नहीं है, संसाधनों की कमी के कारण स्पर्धा और इन संसाधनों को सुरक्षित रखना संभवतः इस सुरक्षा व्यवस्था का कारण था। हाल ही के कुछ भूआकृति विज्ञान के शोधकर्ता (ऑफर बार-योसफ, 1998) दर्शाते हैं कि जेरिको बाढ़ प्रभावित क्षेत्र था, जिससे संकेत मिलता है कि शायद यह दीवार बाढ़ रोकने के लिए बनाई गई हो।

उत्तरी फिलिस्तीन-दमिश्क नदी घाटी और भूमध्यसागरीय तट की बस्तियों के अलावा, बीधा और जेरिको में नवपाषाणिक गांव 6000 बी सी ई के पश्चात् नष्ट हो गए। पर्यावरण में गिरावट आने और आर्द्रता में वृद्धि के कारण स्टैप्स का परित्याग कर दिया गया जिससे बसावट में उस समय कमी दिखाई देती है। नवपाषाणिक समुदाय की इस बदलाव में भूमिका थी। पौधों को उगाने और पशुओं को पालतू बनाने में छोटे भूखण्डों को कृषि के साथ-साथ पशुओं को चरने के लिए साफ करने की आवश्यकता थी। इससे निश्चित रूप से वनों की कटाई पर प्रभाव पड़ा। इस प्रकार, ईंधन के लिए लकड़ी प्राप्त करने के लिए भी पेड़ों को गिराने के चलन ने पर्यावरण के साथ छेड़खानी की जिसके साक्ष्य नवपाषाण काल की स्तरीकृत परतों में पराग कणों में कमी से मिलते हैं।



चित्र 5.2: जेरिको टॉवर, तैल एस-सुल्तान पुरातत्व स्थल, लगभग 7000 बी सी ई  
साभार: रेन्हार्ड दीत्रिख

स्रोत: विकिपीडिया कॉमन्स ([https://fr.m.wikipedia.org/wiki/Fichier: Tower\\_of\\_Jericho.jpg](https://fr.m.wikipedia.org/wiki/Fichier: Tower_of_Jericho.jpg))



### 5.3.2 ईरान और इराक में ज़ाग्रोस पर्वत

ईरान और इराक में ज़ाग्रोस पर्वत के वन प्रदेश कुछ अनाजों की बाली जैसे जंगली गेंहूँ, जौ, दालें, फलियाँ (vetch; मटर के परिवार की एक जंगली प्रजाति), मटर और अलसी के साथ कुछ पालतू बनाए जाने वाले पशुओं की प्रजातियों के भी प्राकृतिक उत्पत्ति स्थल थे। हालांकि, कई फसलों में तनों (rachis) की भंगुरता के कारण बीजों के पकने के बाद झड़ के बिखर जाने के कारणवश अनाजों के बीजों को एकत्रित करने की प्रक्रिया धीमी होती होगी। इसके साथ ही, जैक हरलेन का 1960 के दौरान किया अध्ययन भली प्रकार प्रमाणित करता है कि आवश्यक उपकरणों की अनुपस्थिति के कारण अनाजों के बीजों को हाथ से अलग किया जाता था। 10,000-7000 बी सी ई के मध्य इन कृषि संसाधनों पर निर्भरता बढ़ी होगी जब आरंभिक कृषकों ने नए प्रकार के काटने वाले उपकरण और भंडारण की सुविधा को अपना लिया।

कुर्दिस्तान के स्थल जैसे करीम शहर, शानिदार और तेपे असियाब की खुदाईयां दर्शाती हैं कि शिकारी-संग्रहकर्ताओं को 9800 बी सी ई से जंगली गेंहूँ और अन्य पौधों की जानकारी थी तथा वे उसे उगा रहे थे। ज़ाग्रोस पर्वतों के कुछ आरंभिक कृषि स्थलों पर मध्यपाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच बसावट निरंतरता दिखाई देती है। गंज-दरेह, जो ज़ाग्रोस पर्वत पर 4,593 फुट की ऊँचाई पर स्थित है, लगभग 10,500 वर्ष पूर्व शिकारी-संग्रहकर्ताओं द्वारा इसे मौसमी शरण स्थल की तरह प्रयोग किया जाता था। यहाँ विश्व में बकरी को पालतू बनाए जाने के सबसे पहले साक्ष्य मिलते हैं (ज़ेदर और ब्रियान, 2000: 2254)। नवपाषाण काल के दौरान यह गांव के रूप में परिवर्तित हो गया था। पश्चिमी ईरान के आर्द्र घास के मैदान (स्टैप्स क्षेत्र) में स्थित अली कोश, दसवीं सहस्राब्दि बी सी ई के मध्य बसा हुआ था। यह वह समय था जब शिकारी-संग्रहकर्ता मछली, मृग, जंगली गधा, सूअर, का शिकार करते थे; मेहमेह नदी में मछली और शंख मछली एकत्रित करते और जंगली पक्षियों को पकड़ते थे। 1960 के दौरान फ्रेंक होल और केंट पलेनरी ने खुदाई में जिस बसावट में उत्खनन किया था वह दर्शाते हैं कि उस बसावट में रहने वाले 8000 बी सी ई के दौरान सामान्य सी खेती, शिकार और संग्रहण सभी तरीके का मिला-जुला जीवन जीते थे।



मानचित्र 5.1: उगाए जाने वाले आरंभिक पौधों की प्रजातियां (वेके, रॉबर्ट जे., (1984). पैटर्नस इन प्रीहिस्ट्री: ह्यूमनकाइंड्स फर्स्ट थ्री मिलियन इयर्स. ऑक्सफोर्ड: ओयूपी. पृ. 162 पर आधारित) स्रोत: एम एच आई-01: ऐंशियंट एंड मिडिवल सोसाइटीज, इग्नू स्टडी मटीरियल, 1990, खंड 1, इकाई 3, मानचित्र 4, पृ. 55

इराक की कुर्दिश पहाड़ों की तलहटी में स्थित जार्मो के विकास का इतिहास (लगभग 7000-4700 बी सी ई) बहुत लम्बा है, कि किस प्रकार यह अस्थाई बसावट से स्थाई गांव में विकसित हुआ। यहां सबसे पहले खुदाई, शिकागो विश्वविद्यालय के ओरिएंटल संस्थान के रॉबर्ट जे. ब्रेडवुड ने 1949-50 में की थी। ब्रेडवुड का इस बात पर बहुत गहरा विश्वास था कि खाद्य उत्पादन का सबसे पहला केन्द्र ज़ाग्रोस पर्वतों की पहाड़ियों के बीच में रहा होगा जहां पर्यावरणीय कारणों से उगाए जाने वाले पौधों और पालतू बनाए जाने वाले पशु प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। इन्होंने इस जगह को 'नाभिकीय क्षेत्र' (nuclear zone) की संज्ञा दी। खुदाई, जो अगले पांच वर्ष, 1955, तक चलती रही, दर्शाती है कि जार्मो का नवपाषाणिक गांव 4700 बी सी ई के दौरान अच्छी तरह विकसित हो गया था और जो लगभग तीन से चार एकड़ में फैला हुआ था ('जार्मो एक्सपीडीशन', 1955: 460)। यहां रहने वालों ने मिट्टी के मकान बनाए थे जो अधिक टिकाऊ नहीं थे। यहां पर एक ही जगह पर दुबारा निर्माण के साक्ष्य मिलते हैं। मकानों की मरम्मत की गई थी और शायद भूमि की किफायत के लिए उसी स्थान पर दुबारा निर्माण किया गया था। बार-बार निर्माण के कारण विघटित ढेरों से लगभग 5 फुट मोटी एक दीवार उठाई गई थी जो शायद बाढ़ से भी बचाव करती थी। लगातार इस क्षेत्र में पुनः बसावटों के कारण 12 अलग-अलग स्तरों के उच्च स्थल मिलते हैं। जार्मो में पकी हुई मिट्टी से बने लगभग 24 घरों का समूह मिलता है। जार्मो में मिट्टी के पलस्तर की दीवार वाले गांव कुछ-कुछ संकेत देते हैं कि इस गांव का फैलाव 150 लोगों के आसपास था।

जार्मो चरवाहों और कृषकों का समाज था। जानवरों की हड्डियों के अवशेषों में खासतौर पर पालतू बनाए जाने वाले जानवरों जैसे भेड़, बकरी और सूअर की हड्डियाँ बड़ी संख्या में पाई गई हैं। खुदाई में प्राप्त पीसने वाले पत्थर, ओखली, मूसली, पत्थर का हँसिया और अनाज के कार्बन में परिवर्तित दाने दर्शाते हैं कि जार्मो में रहने वाले अत्यधिक सक्रिय कृषक थे। वनस्पतिज्ञ हेंस हॉलबैक, जो इस अभियान का हिस्सा थे, उन्होंने आरंभिक 1950 के दौरान जार्मो में खुदाईयां करवाईं, उन्हें घरों की मिट्टी की दीवारों पर अनाज के निशान मिले, विशेषकर चूल्हे की मिट्टी की दीवारों पर। ब्रेडवुड के अनुसार यहां पर कृषक गेहूँ और जौ ऊपजाने के आरंभिक चरण में थे। अनाज की बालियों के साथ-साथ मटर और दालें भी उगाई जाती थीं। यहां के निवासी दैनिक जीवन में पत्थर का व्यापक स्तर पर इस्तेमाल करते थे। उनके औजारों के किनारे चकमक (flint) पत्थर और चमकदार लावे के कांच (obsidian; लावे से बना प्राकृतिक कांच) से मढ़े हुए थे और उनके औजारों के भंडार में लघुपाषाण औजार भी सम्मिलित थे। लावे का कांच मुख्य रूप से अनातोलिया, लगभग तीन सौ मील उत्तर, से वान झील क्षेत्र से लाया जाता था। इसका अर्थ यह है कि इन दोनों क्षेत्रों के बीच नियमित आदान-प्रदान का सम्बंध था।

पत्थर का प्रयोग पीसने वाले उपकरण जैसे मूसली, ओखली और चक्की आदि बनाने के लिए भी किया गया था। अनेक सजावटी चीजें जैसे मोती, लॉकेट और कंगन भी पत्थर से बनाए गए थे। हड्डी का प्रयोग दैनिक प्रयोग की वस्तुएं बनाने और सजावट दोनों के लिए किया गया था जैसे सुआ, सुईयां, पिनें, चम्मचें और मोती। मिट्टी का व्यापक प्रयोग मनुष्य और जानवरों के कई किस्म के सिर बनाने में किया जाता था जिन्हें संभवतः ईश देवता की भेंट, अनुष्ठान अथवा प्रजनन संबंधी धार्मिक कृत्यों के लिए प्रयोग किया जाता था। यह दिलचस्प है कि, मिट्टी की सुघड़ता से परिचित होते हुए भी जार्मो के आरंभिक निवासियों ने इसका प्रयोग आसानी से उठाकर ले जाने योग्य मिट्टी के बर्तन बनाने में नहीं किया और उन्होंने पत्थर के कटोरे और तारकोल की कलई (डांबर) वाली टोकरियों का ही प्रयोग जारी रखा। लिनडा ब्रेडवुड (1952) का विचार है कि हालांकि मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग, जो काफी सुघड़ता से निर्मित थे, बाद में इस कालावधि में आखरी निवासियों द्वारा किया गया, जो दर्शाते हैं कि यह तकनीक जार्मो के पास बाहर से आई थी, जिसे क्षेत्रीय निवासियों द्वारा अपनाया गया था।





चित्र 5.3: जार्मो से प्राप्त व्यक्तिगत आभूषण – 1. कार्नेलियन मनके, 2. फिरोजा मनके  
3. मिट्टी के मनके 4. पत्थर के कंगन, 5. मिट्टी, पत्थर तथा सीप के पेंडेंट  
साभार: दादेरॉत ओरियंटल संस्थान संग्रहालय की प्रदर्शनी शिकागो विश्वविद्यालय, शिकागो, यू.एस.ए.

स्रोत: क्रिएटिव कॉमंस ([https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Jarmo\\_personal\\_adornments,\\_1\\_carnelian\\_beads,\\_2\\_turquoise\\_bead,\\_3\\_clay\\_beads,\\_4\\_stone\\_bracelets,\\_5\\_pendants\\_of\\_clay,\\_stone,\\_and\\_shell\\_-\\_Oriental\\_Institute\\_Museum,\\_University\\_of\\_Chicago\\_-\\_DSC06938.JPG](https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Jarmo_personal_adornments,_1_carnelian_beads,_2_turquoise_bead,_3_clay_beads,_4_stone_bracelets,_5_pendants_of_clay,_stone,_and_shell_-_Oriental_Institute_Museum,_University_of_Chicago_-_DSC06938.JPG))

दक्षिण पश्चिम मध्य ईरान के पड़ोसी क्षेत्रों में भी इसी तरह का विकास हो रहा था। कर्मनशाह और जाग्रोस के पूर्व की तरफ के स्थलों पर बीसवीं सदी के मध्य से शुरू की गई खोजों ने शिकार और संग्रहण में निपुणता के आधार पर समुदायों के बसने की आरंभिक प्रक्रिया को प्रदर्शित किया है। रॉबर्ट ब्रेडवुड अपने इस विचार पर लगातार बने रहे कि इन स्थलों से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर केंट फ्लेनरी द्वारा प्रस्तावित तीन प्रकार के जीवनयापन की अवधारणा को स्थापित करना बहुत मुश्किल है जिसमें उन्होंने विशेषीकृत शिकार-संग्रहण के चरण और 'आरंभिक कृषि' के उस चरण में भेद किया जिसने 'व्यापक स्पैक्ट्रम क्रांति (broad spectrum revolution)' का नेतृत्व किया।

हालांकि, लगभग 6000 से 5,000 बी सी ई की सीरिया और मेसोपोटामिया नवपाषाण संस्कृतियों में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई। इसके उदाहरण हलफ़, हसुना, समारा और उबैद की संस्कृतियों में देखे जा सकते हैं। यह प्रगति हाथ से मिट्टी के बने बर्तनों की विशिष्टता, घरों की निर्माण कला और कुछ स्थलों पर सिचाई पर निर्भरता में साफ दिखाई देती है। 5500 बी सी ई तक दक्षिणी मेसोपोटामिया के कुछ भागों में कृषि, गाय-बैल और भेड़ के पालन, खजूर की खेती और मछली पकड़ने में महत्वपूर्ण सुधार हुआ था।

### बोध प्रश्न-1

1) पश्चिमी एशिया के कुछ आरंभिक कृषि स्थलों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) ऊपर चर्चित क्षेत्रों के संदर्भ में पर्यावरणीय परिवर्तनों, जनसंख्या वृद्धि और सामाजिक परिवर्तन के बीच परस्पर सम्बंध की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) पश्चिमी एशिया के स्थलों में कृषि गतिविधियों में समानताओं और असमानताओं पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

**5.4 अनातोलिया और यूरोप से प्राप्त साक्ष्य**

आरंभिक अभिनव युग में अनातोलिया में वर्षा में वृद्धि लगातार बनी रही। जिससे इस क्षेत्र के, विशेषकर पश्चिमी और मध्य भागों में वन आवरण को फैलने में सहायता मिली। लेवांट में मानव-आवास की परिस्थितियों में सुधार बहुत बाद में शुरू हुआ लेकिन आवासीय परिस्थितियां यहां बहुत लम्बे समय तक बनी रहीं। दक्षिणपूर्वी अनातोलिया में फ़रात (Euphrates) और टिगरिस द्वारा जलप्लावित क्षेत्रों में एनकॉर्न गेहूं की खेती के साक्ष्य मिलते हैं। सनलिउरफा येनी महाले क्षेत्र, जिसे विश्व में एनकॉर्न की खेती के सबसे पुराने स्थल के रूप में पहचाना गया है, लगभग 9400 बी सी ई पुराना है। आसपास के अन्य स्थलों जैसे कि सायोनु तेपेसी (8600-7000 बी सी ई) में हम स्पष्ट तौर पर शिकार संग्रहण और कृषि के कुछ अंश दोनों पर निर्भर सामान्य सी अर्थव्यवस्था की प्रगति को पहचान सकते हैं, जैसा कि वहां पत्थर के पीसने वाले उपकरण बनाने की प्रक्रिया और इसके साथ ही कैप्राइन (caprines; बकरी से सम्बंधित) को पालतू बनाने के साक्ष्य मिलते हैं। सैद्धांतिक रूप से भेड़ और बकरी, जिनका आंशिक रूप में अनुष्ठानिक महत्व था, जटिल सामाजिक रीति-रिवाज से संबंधित थे।

जे. मेलार्ट ने 1960 के दशक के दौरान, केटालहोयुक स्थल की सबसे पहले खुदाई की थी, और इयान होडर द्वारा यहां हाल ही में की गई खुदाई के आधार पर इसे अनातोलिया में उत्तर नवपाषाणिक स्थलों में सबसे बड़ा और प्रमुख स्थल माना जाता है। 7400 बी सी ई और 6200 बी सी ई के बीच यह एक गांव था। यह उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पर और झरने के समीप स्थित था जिसने पौधों को उगाने और अनाज के संकरण (एक किस्म को दूसरी किस्म के साथ मिलाकर पैदावार करना) के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान किए। यहां पालतू बनाए जाने वाले सबसे प्रमुख जानवर गाय-बैल थे। अनातोलिया के पठार पर स्थित यह प्रदेश लावे के कांच (obsidian) की चट्टान के पास था, ज्वालामुखी के लावे का कांच कृषि में इस्तेमाल करने वाले उपकरणों की धार को तेज़ बनाने के लिए किया जाता था जिसका पूरे पश्चिमी एशिया में आदान-प्रदान किया जाता था। यह इतने व्यापक स्तर पर फैला हुआ था कि विद्वान इस तरह के लावे के कांच को आमतौर पर दूसरी वस्तुओं से आदान-प्रदान के लिए 'व्यापार' शब्द का प्रयोग करते हैं।



चित्र 5.4: केटालहोयुक की आरंभिक खुदाई

साभार: उमर हॉपतुन

स्रोत: वीकीपीडिया

([https://commons.wikimedia.org/wiki/](https://commons.wikimedia.org/wiki/File:%C3%87atalh%C3%B6y%C3%BCk_excavations_.jpg)

[File:%C3%87atalh%C3%B6y%C3%BCk\\_excavations\\_.jpg](https://commons.wikimedia.org/wiki/File:%C3%87atalh%C3%B6y%C3%BCk_excavations_.jpg))

लगभग 8000 वर्ष पूर्व, केटालहोयुक की नवपाषाणिक बसावट 32 एकड़ क्षेत्र तक फैली हुई थी। धूप में सुखाई गई ईंटों से लगभग समान आकार के अनगिनत मकान बनाए गए थे। मकानों की नींव में भी मिट्टी की ईंटों का प्रयोग किया गया था। मकान आयताकार थे और उसमें एक भण्डार गृह भी जुड़ा होता था। वे एक दूसरे के पीछे बने हुए और कई बार छोटे से आंगन से अलग होते थे। मकानों के अन्दर उल्लेखनीय समरूपता देखने को मिलती है जिसमें आराम करने की जगह, रसोई और पूजास्थल के लिए विशेष स्थान बनाए हुए थे। मकानों का प्रवेश छत से था जिसमें हटाई जा सकने वाली सीढ़ी की सहायता से पहुंचा जा सकता होगा। इसके द्वारा बाहरी लोगों और बाढ़ से सुरक्षा मिलती होगी। सुरक्षा की यह व्यवस्था बहुत हद तक सफल रही होगी क्योंकि केटालहोयुक के विनाश का कारण सिर्फ आग ही थी। यह ऐसा गांव था जिनमें अक्सर शहर के गुण भी देखे गए। 1200 वर्ष की समयावधि में उसका 18 बार पुनः निर्माण किया गया।

दिलचस्प है कि, पड़ोस के गोबेक्ली तेपे स्थल के विपरीत, जहाँ हाल ही में की गई खुदाईयों में महापाषाणीय ढांचों की उपस्थिति मिली है, केटालहोयुक में सार्वजनिक पूजास्थल या उत्सव केन्द्र नहीं मिलते। लौकिक और आनुष्ठानिक दोनों प्रकार की गतिविधियां घरों के अन्दर ही किए जाने के साक्ष्य मिलते हैं। पुरातात्विक साक्ष्य दर्शाते हैं कि अनेक मकानों के समूहों को केवल मलबे के ढेर या फिर संकरी गलियां अलग करती थीं, इनमें व्यापक अलंकरण था और वे उच्च स्तर की प्रतीकात्मकता को दर्शाते हैं। ईयान होडर की टीम को यहां खुदाई के दौरान मानव और जानवरों के बड़ी संख्या में चित्र, कई घरों में कब्रें, मृत्यु के बाद अलग की गई खोपड़ियां, साथ ही साथ बैलों के सींग और लेप लगाए हुए सांड के सींग प्राप्त हुए जो दीवारों तथा बेंचों पर व्यवस्थित रूप से रखे हुए थे। यह विस्तृत फैलाव तथा आदान-प्रदान और पहचान के जटिल अर्थों को प्रतिबिम्बित करता है। यह ये भी दर्शाता है कि वहां पवित्र और सांसारिक पूरी तरह एक दूसरे में मिले हुए थे, लेकिन फिर भी, जैसा कि होडर (2010) ने अपने शोध के आधार पर निष्कर्ष निकाला, कि वहां के लोगों का पूर्वजों के साथ गहरा जुड़ाव बना हुआ था। अनातोलिया और अन्य दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में इसके समान लेकिन संभवतः कम जटिल प्रवृत्ति प्रचलन में थी। कृषि का आरंभ अपने आप में कोई अलग घटना नहीं थी। कहीं

यह पहले घटी और कहीं बाद में, कई बार अनुसरण करते हुए जटिल सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के साथ कदम मिलाती रही जिससे विद्वानों में जिज्ञासा बनी हुई है।

यूरोप में कृषि का आरंभ कम आकस्मिक था। बर्फ की चादरों के संकुचन और हिमकाल के अंत के परिणामस्वरूप गर्म और आर्द्र परिस्थितियों का आरंभ हुआ। इस कारण रेंडियर अधिक ठंडे प्रदेशों की तरफ चले गए और लाल हिरण और एल्क (elk; हिरण परिवार का सदस्य) जैसे शाकाहारी जानवर उत्तरपश्चिमी यूरोप की ओर चले गए। शिकारी-संग्रहकर्ता समूहों ने मध्यपाषाणकाल में नव निर्मित झीलों और झरनों का लाभ उठाया। अन्यत्र, बाल्टिक और केस्पियन सागर के किनारे मछली पकड़ने और जाल द्वारा पक्षी पकड़ने से जीवन निर्वाह के अतिरिक्त स्रोत मिले। उत्तरपश्चिमी यूरोप (लगभग 11,000-9000 बी सी ई) में मध्यपाषाणकाल के पुरातात्विक दस्तावेज़ दर्शाते हैं कि जलवायु परिवर्तन के कारण छोटे जानवर जैसे हिरण, जलपक्षी, मछली, घोंघे और सीपी में बहुत अधिक वृद्धि हुई जिसने शिकार को कठिन बनाया, जिसने समुदायों को गहन भोजन संग्रहण और सीमित शिकार करने पर मजबूर कर दिया।

यूरोप में कृषि के आरंभ को लेकर विद्वानों में विवाद है। अनेक विद्वानों का मत है कि कृषि की उत्पत्ति पश्चिमी एशिया में हुई और अनातोलिया और अन्य भागों से किसानों के आने के पश्चात् यूरोप के विभिन्न भागों में फैली। इस विचार को यूरोप में कृषि की स्थानीय वृद्धि का तर्क देने वालों के द्वारा चुनौती मिली। यूरोप में एम्मर गेंहूँ, जौ की खेती तथा गाय-बैल और सूअर को पालतू बनाने के आरंभिक साक्ष्य दक्षिण-पूर्व यूनान (7000 बी सी ई) में अरगिस्सा-मधुला से और बाद में फ्रांच्थी गुफाओं से (6000 बी सी ई) मिलते हैं। इटली के पश्चिमी तट ने 6000 बी सी ई के आसपास इसी तरह के विकास का अनुभव किया।

जहां तक कि सम शीतोष्ण यूरोप का सम्बंध है, कृषि का आरंभ स्थानीय और बाहरी दोनों तत्वों के आने के परिणामस्वरूप हुआ। पर्यावरणीय परिवर्तनों, जैसा कि भूमध्यसागर के जल स्तरों में वृद्धि के कारण काले सागर का जल स्तर बढ़ने ने भी समुदायों को डेन्यूब घाटी के ऊपरी हिस्सों और समुद्र के किनारों और तटों पर बसने के लिए प्रेरित किया होगा। यह घटना संभवतः 5500 बी सी ई के दौरान घटी। सम शीतोष्ण यूरोप में आरंभिक कृषि मुख्य रूप से लोएस मिट्टी (loess; एक प्रकार की उपजाऊ रेतीली पीली मिट्टी) में उसके उपजाऊ होने के कारण हुआ जिसे खोदने वाली लकड़ियों और सामान्य हल से आसानी से जोता जा सकता था। गाय-बैलों के पालन और जौ, एनकॉर्न जैसी फसलों पर आधारित कृषि अर्थव्यवस्था का विकास यहां छठी सहस्राब्दि बी सी ई के अंत तक हो चुका था।

बाल्कन क्षेत्र (दक्षिण-पूर्व यूरोप में स्थित) के बाढ़ के उपजाऊ मैदानों में कृषि के आरंभिक प्रयोग बहुत हद तक सफल रहे। 5500 बी सी ई के दौरान गेंहूँ और जौ की खेती, पालतू भेड़-बकरी और एक कमरे के मिट्टी के लेप वाले मकान पर आधारित कृषि अर्थव्यवस्था यहां फल-फूल रही थी। बाल्कन ऐसा क्षेत्र है जहां पश्चिमी एशिया और अनातोलिया की तरह काफी पर्यावरणीय विविधता और तापमान में विभिन्नता है। उपजाऊ और स्थाई रूप से झरनों द्वारा जल प्राप्त करने वाले बाढ़ के मैदान वाले नम क्षेत्रों ने समुदायों को बिना किसी व्यवधान के लम्बे समय तक यहां रहने के लिए प्रेरित किया। करानोवो (लगभग 5500 बी सी ई) और उसके कुछ बाद की बंदकेरामिक (5300 बी सी ई) संस्कृति जौ, एनकॉर्न, एम्मर गेंहूँओं और गौण पौधों जैसे फ्लैक्स की कृषि के आधार पर बनी रही। उन्होंने फसल के नियमित आवर्तन और भूमि को खाली छोड़ने की प्रणाली का प्रयोग किया। इस प्रक्रिया में, पैदा की गई फसल के टूटों को जला दिया जाता था ताकि भूमि अपनी उर्वरता पुनः प्राप्त कर ले। झूम कृषि (swidden cultivation) अथवा फसल काटने के बाद खेत जलाने वाली खेती की इस प्रक्रिया ने किसानों को एक स्थान पर लम्बे समय तक टिके रहने के योग्य बनाया। भेड़, बकरी और कुत्ते रखे जाते थे लेकिन गाय-बैल मुख्य पालतू पशु थे। जैसे-जैसे जनसंख्या घनत्व में वृद्धि

हुई और कृषि ने जनसंख्या वृद्धि का सफलतापूर्वक पोषण किया, जैसे-जैसे बंदकेरामिक संस्कृति का यूरोप के अन्य भागों में विस्तार हुआ। हॉलैंड और अन्य स्थानों पर 4000 बी सी ई के आसपास धारीदार पट्टियों वाले सजावटी मिट्टी के बर्तनों की उपस्थिति से यह स्पष्ट होता है।

जैविक विविधता और समृद्ध वनस्पति और जीवों ने शिकारी-संग्रहकर्ताओं को पूर्वी यूरोप में फलने-फूलने में सहायता की। 8000 बी सी ई के आसपास पूर्वी यूरोप चीड़ (pine) और भोज (birch) वनों के साथ उत्तर में चौड़ी पत्तियों वाले पेड़ों की प्रजातियों और दक्षिण में घास के मैदान (स्टैप्स) वाली वनस्पतियों के आवरण से ढका हुआ था जिसने विशाल जानवरों का पालन किया। इसने शिकार-संग्रहण अर्थव्यवस्था को विशेष आधार प्रदान किया होगा। कुछ विद्वानों ने यह भी पाया कि बाद में नवपाषाणिक भागों से नए पारिस्थितिकीय स्थानों पर जनसंख्या के जाने से वहां उन्होंने मध्यपाषाणिक जीवन शैली को अपनाया। अतः जीवन निर्वाह की पुरानी पद्धति में प्रत्यावर्तन भी संभव था!

अभी तक कृषि के आरंभ पर चर्चा करने का हमारा मुख्य उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना और आपको यह समझाना था कि आरंभिक कृषकों ने पर्यावरण विशेष को नहीं अपनाया था बल्कि अनेक पर्यावरणों में उपलब्ध विशेष पौधों और जानवरों को अपनाया था। कुछ अनाज वाले पौधों के साथ इनका परिचय इन पौधों के बीजों को एकत्रित करने के दौरान आरंभ हुआ होगा। उदाहरण के लिए, नेतुफियनों का वर्ष के विशेष समय में विशेष स्थानों पर पौधों और जानवरों के विचरण की दिशा अथवा उपलब्धता के आधार पर शिकार और संग्रहण गतिविधियों में बदलाव करने का एक नियत समय था। अंततः, उदाहरण के लिए, अनियमित और बिना किसी योजना के भोजन प्राप्ति के बजाय उन्होंने नियत समयानुसार भोजन प्राप्ति का तरीका अपनाया, जिसने उन्हें निश्चित प्रकार के पौधों और जानवरों पर निर्भर बनाया। पश्चिमी एशिया और यूरोप के विभिन्न स्थलों के संदर्भ यह तथ्य स्थापित करते हैं कि कृषि के पूर्ण रूप से विकसित हुए बिना ही एक ही स्थान पर साल भर लम्बे समय तक रहा जा सकता था और इस बसावट को दोहराया भी जा सकता था।

## 5.5 मेसोअमेरिका और चीन

मेसोअमेरिका प्रशांत महासागर और मेक्सिको की खाड़ी में स्थित एक भौगोलिक क्षेत्र है (मानचित्र 5.2)। जिस समय पश्चिमी एशिया और यूरोप के विभिन्न भागों में कृषि कार्य हो रहा था, मेसोअमेरिका में एक परस्पर विरोधी प्रवृत्ति उभर रही थी। मेसोअमेरिका में मक्का की खेती करने के बाद भी अस्थायी बसावट और खानाबदोशी भी बनी रही। इस क्षेत्र का पर्यावरण शिकारी-संग्रहकर्ता समूहों के लिए प्रतिकूल था क्योंकि उन्हें यहां शिकार प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था। तेहुअकान खाड़ी क्षेत्र, जो मेक्सिको शहर से 125 मील दक्षिण पूर्व में स्थिति था, में 11,000 बी सी ई के बाद जलवायु धीरे-धीरे शुष्क-आर्द्र होती चली गई। शिकारी-संग्रहकर्ता मौसम आधारित शिकार और संग्रह करने लगे जिससे संसाधनों पर अनावश्यक बोझ नहीं पड़ा। ठंड में वे शिकार किया करते थे और गर्मी के दिनों में घाटी के अपेक्षाकृत बेहतर जल वाले सिंचित क्षेत्रों में फल और बीज एकत्रित किया करते थे।

जैसे-जैसे लोग एक पारिस्थितिक क्षेत्र से दूसरे पारिस्थितिक क्षेत्र में जाते थे, विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त प्रजातियों के बारे में उनकी जानकारी में वृद्धि होती थी। वे मेसोअमेरिका के निचले और ऊपरी दोनों हिस्सों में मक्का, कुम्हड़ा और फली उपजाया करते थे और हमेशा नए क्षेत्रों को खोजते रहते थे। 5000 बी सी ई तक आते-आते छोटे शिकारी-संग्रहकर्ता समूह कहीं-कहीं तट के किनारे बसने लगे। मक्का उपजाने के लगभग 4000 वर्ष बाद तटीय क्षेत्रों में कृषि उत्पादन और ग्रामीण जीवन के निशान मिलने लगते हैं। 3400 बी सी ई तक आते-आते लोग



गांवों में रहने लगे और मक्का पैदा करने लगे। मक्का के साथ-साथ कुम्हड़ा और फली भी पैदा हुआ करती थीं और यह वहां रहने वाले लोगों का मुख्य भोजन था। 3000 बी सी ई के आसपास पेरू, अर्जेंटीना और चिली जैसे मध्य और दक्षिण अमेरिकी क्षेत्र से मक्का उगाने के प्रमाण मिलते हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि जो पौधा मूलतः उच्च भूमि में होता था बाद में इसे हर पारिस्थितिक क्षेत्र में लगाया जाने लगा। परंतु खानाबदोशी और घुमंतू जीवनशैली का पूरी तरह से परित्याग नहीं किया गया था।

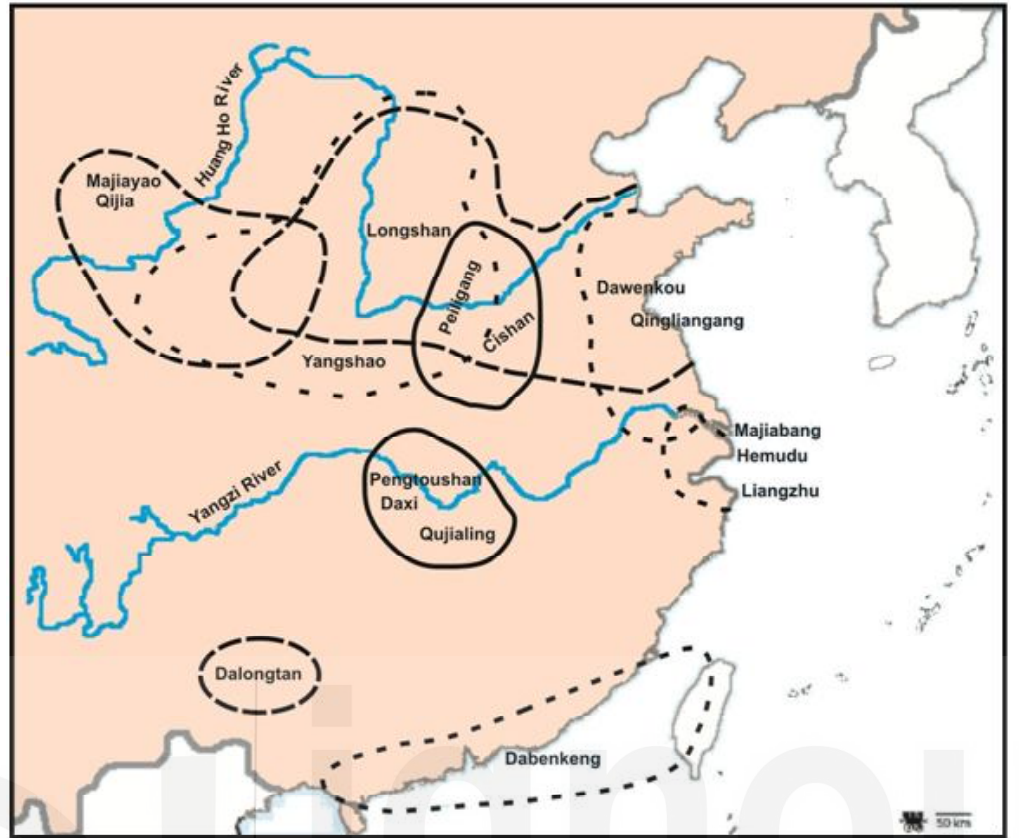


मानचित्र 5.2: मेसोअमेरिका और उसके सांस्कृतिक क्षेत्र  
साभार: ग्रिन्गोनचिली

स्रोत: वीकीपीडिया के मानचित्र पर आधारित ([https://en.wikipedia.org/wiki/Mesoamerica#/media/File:Mesoamerica\\_english.PNG](https://en.wikipedia.org/wiki/Mesoamerica#/media/File:Mesoamerica_english.PNG))

चीन में कृषि का आरंभ आरंभिक अभिनव युग में चावल और बाजरा (millet) उगाने से सम्बंधित है। वनस्पति विज्ञानियों का मानना है कि दोनों, एशियाई चावल और बाजरे के प्रकार, अभिनूतन युग के पश्चात् पूर्वी हिमालय क्षेत्र से फैले थे। दोनों में से चावल गर्म और नमी वाली परिस्थितियों में उगाने के लिए उपयुक्त है, वही जलवायु दक्षिण चीन में स्थित मध्य-यांग्ज़ी के दलदली क्षेत्रों में मौजूद थी। बाद में चावल की जंगली प्रजाति के फैलाव ने दक्षिण के कछार और तर क्षेत्रों में गति पकड़ी। अतः जंगली चावल की किस्म का एकत्रण 10,000-8000 बी सी ई के बीच में किया गया। भोजन की खोज में घूमने वाले समुदायों का निर्वाह व्यापक स्पेक्ट्रम अर्थव्यवस्था (broad spectrum economy) के तहत बीज, जल वनस्पति और जड़ प्रजातियों के संग्रहण, मछली पकड़ने और छोटे जानवरों, जैसे हिरण और सूअर, के शिकार द्वारा होता था। कुछ समय पश्चात् पौधे तैयार होने के बाद टूट कर नहीं फैलने वाले चावल की किस्म के चयन ने इसकी कृषि करने के कार्य को प्रोत्साहित किया। चावल की खेती का विस्तार अन्य क्षेत्रों में कुछ स्थायी बस्तियों के विस्तार के साथ हुआ। इसका निश्चित प्रमाण मध्य-यांग्ज़ी घाटी के पेन्गटोउशान से 6500-5800 बी सी ई के बीच में मिलता है। दक्षिण शंघाई की हेमुदु संस्कृति में लगभग 7000 बी सी ई से चावल की खेती, हड्डी के फावड़ों और हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिलते हैं।





मानचित्र 5.3: चीन में विभिन्न नवपाषाण संस्कृतियों द्वारा अधिकृत क्षेत्र

साभार: लामासू डिजाइन गुरडाइफ (लोपेस, रुई ऑलिविरा. 2014. 'सिक्वोरिंग द हारमोनि बिटवीन द हाई एंड लो: पॉवर एनिमल्स एंड सिंबल्स ऑफ पोलिटिकल अथॉरिटी इन एनसिएन्ट चाइनीज़ जेड्स एंड ब्रॉज', एशियन परस्पेक्टिव. भाग 53 (2): 195-225 के मानचित्र पर आधारित)

स्रोत: क्रिएटिव कॉमंस

([https://en.wikipedia.org/wiki/List\\_of\\_Neolithic\\_cultures\\_of\\_China#/media/File:Neolithic\\_china.svg](https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_Neolithic_cultures_of_China#/media/File:Neolithic_china.svg))

उत्तरी चीन की हुआंग-हो घाटी में मुख्य पैदावार बाजरे की थी पर यहां चावल की खेती के आरंभ का प्रमाण लगभग मध्य-सातवीं सहस्राब्दि बी सी ई के आसपास मिलता है। सबसे पुराने गांव यहां 6300-5100 बी सी ई में मिलते हैं जो पेएलीगांग संस्कृति से संबंधित थे। यहां की दो सर्वाधिक ज्ञात क्षेत्रीय संस्कृतियां – यांग-शाओ (लगभग 5100-3000 बी सी ई) और लांग-शान संस्कृति (लगभग 3000 बी सी ई) (मानचित्र 5.3) थीं। यांग-शाओ संस्कृति की अर्थव्यवस्था कुदाल और खुदाई करने वाली लकड़ियों की मदद से बाजरे (foxtail millet) की खेती और शिकार करने तथा मछली पकड़ने पर आधारित थी। यहां शहतूत के पेड़ों का उपयोग रेशम के कीड़ों के लिए किया जाता था। लांग-शान संस्कृति का विस्तार पूर्व और दक्षिण की ओर हूनान, शानतुंग, हूपेई कियांगसू, शेकियांग और ताइवान में हुआ। जो मुख्य रूप से चावल, बाजरा, गेहूं, सोयाबीन की कृषि और मुर्गी, भेड़ और मवेशियों के पालन पर आधारित थी। दोनों संस्कृतियों के गांवों में सुरक्षा के लिए व्यापक खाई बनाई गई थी। यहां पर घरों की इमारतें या तो अर्द्ध-भूमिगत थीं या उनकी सतह लकड़ी से निर्मित थी। चीन में कांस्य युग से सम्बंधित बहुत सी विशेषताएं पहले से ही नवपाषाणकाल से स्थापित थीं जैसे कि उच्च कोटि के मिट्टी के बर्तनों के निर्माण की परम्परा, लेखन प्रणाली और एक जटिल स्तरीकृत समाज।

1) केटालहोयुक के आरंभिक कृषि-स्थल के रूप में महत्व पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

2) क्या आप यह मानते हैं कि एक स्थान पर बसकर रहने वाला जीवन कृषि के बिना संभव था और क्या खानाबदोश कृषि के आरंभिक प्रयासों के साथ-साथ मौजूद रह सकते थे? कुछ उदाहरण दीजिए।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

3) चीन में कृषि के आरंभ की प्रक्रिया का वर्णन कीजिये।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

4) मेसोअमेरिका कहां पर स्थित है? उस क्षेत्र के भूगोल का खानाबदोशी के साथ पौधे उगाने की प्रक्रिया के प्रयोग पर क्या प्रभाव पड़ा?

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

---

## 5.6 सारांश

---

अब तक की चर्चा यह तथ्य स्थापित करती है कि कृषि की ओर जो संक्रमण हुआ वह अत्यधिक महत्वपूर्ण था और कुछ मायने में उसने सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया। कृषि से संबंधित दो विशेषताएं, जो कारण और प्रभाव दोनों ही बने, वह थे – जनसंख्या वृद्धि और बस्तियों का विस्तार। इसने मानव को बदलती परिस्थितियों से उभरने के लिए नई रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। हालांकि यह निष्कर्ष निकालना ग़लत होगा

कि कृषि के आरंभ ने आरंभिक कृषकों के जीवन में तुरंत क्रांति ला दी थी, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि सिंचाई आधारित खेती में निहित क्षमता (अधिशेष की संभावना, अधिक से अधिक आदान-प्रदान, आदि) ने एक जटिल समाज के गठन को प्रोत्साहित किया। यह इकाई विश्व के विभिन्न भागों में कृषि के आरंभ के अनेक तरीकों के अध्ययन की एक रूपरेखा प्रदान करती है। कृषि के आरंभ के प्रयासों का विश्व के विभिन्न भागों में मानव समुदायों पर निश्चित प्रभाव पड़ा, जिसका वर्णन अगली इकाई में किया गया है।

---

## 5.7 शब्दावली

---

बिटूमन / डांबर	: यह एक हाइड्रोकार्बन है जो कच्चे तेल के आंशिक आसवन द्वारा निर्मित किया जाता है। इसका प्रयोग आजकल सड़क निर्माण में किया जाता है।
संकरण (Hybridization)	: वह प्रक्रिया जिसमें दो अलग-अलग प्रजाति के पशुओं या पौधों में निशेचन (breeding) कर नया पशु या पौधा उत्पन्न किया जाता है।
ओबसीडियन / लावा काँच	: प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला ठोस काँच जो ज्वालामुखी-शिला का अत्यन्त कांचीय रूप है। इसका इस्तेमाल चाकू और खुरचनी बनाने में किया जाता था।

---

## 5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

---

### बोध प्रश्न-1

- 1) भाग 5.3 और उसके दोनों उप-भाग देखें
- 2) तापमान बढ़ने और वर्षा, नए स्थानों के लिए खोज, जनसंख्या वृद्धि, निर्वाह की नई रणनीतियाँ और वर्षा के बीच अंतर-सम्बन्ध पर चर्चा करें। भाग 5.3 और उसके दोनों उप-भाग देखें
- 3) विभिन्न कृषि-पद्धतियों, स्थायी बसावटों या खानाबदोशी मिश्रित जीवन, और मिट्टी के बर्तनों, उपकरणों, इत्यादि में भिन्नता पर चर्चा करें। भाग 5.3 और इसके दोनों उप-भाग देखें

### बोध प्रश्न-2

- 1) भाग 5.4 देखें
- 2) हाँ। विस्तृत जानकारी के लिए भाग 5.5 देखें
- 3) भाग 5.5 देखें
- 4) अधिक जानकारी के लिए भाग 5.5 देखें

---

## 5.9 संदर्भ ग्रंथ

---

‘जार्मो एक्सपडिशन’. सितम्बर 9, 1995. साइंस (न्यू सिरीज़). 122 (3167): 460 (अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द अडवांसमेंट ऑफ साइंस). वाशिंगटन डी.सी.

ब्रेडवुड, लिंडा एस. सितम्बर, 1952. 'अर्ली फूड प्रोड्यूसर्स: एक्सकॅवैशॅन्स इन इराकी कुर्दिस्तान'. *ऑर्कीऑलजी*, 5 (3): 157-164.

फेगन, ब्रायन. एम. एवं एन. दुर्रानी, नाडिया, 2016. *द पीपल ऑफ दी अर्थ: ऐन इन्ट्रोडकशन टू वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री*. लंदन: रोटलेज.

फलेनरी, के. वी. 1973. 'द ऑरिजिंस ऑफ एग्रीकल्चर', *ऐन्यूअल रिव्यू ऑफ ऐन्थ्रोपॉलजी*, 2: 271-310.

होडर, इयान (संपादित). 2010. *रिलिजॅन इन द इमर्जन्स ऑफ सिविलाइज़ेशन: केटालहोयुक ऐज़ ए केस स्टडी*. केम्ब्रिज: केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

केनयॉन, कैथलीन एम, 1959. 'सॅम ऑब्ज़र्वेशनस ऑन द बिगिनिंग्स ऑफ सेटल्मेन्ट्स इन द निअर ईस्ट', *द जर्नल ऑफ द रॉयल ऐन्थ्रोपॉलजीकल इन्स्टीट्यूट ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड*, 89 (1): 35-43.

फ्राइस, टी. डगलस एवं ऑफर-बार योसेफ. 2011. 'द ऑरिजिन्स ऑफ एग्रीकल्चर: न्यू डाटा, न्यू आईडियाज़', *करंट ऐन्थ्रोपॉलजी*, 52 (4), 163-174.

विजेसूर्या, अमलका थयरीज़ अबाउट ऑरिजिन ऑफ डोमेस्टिकेशन एंड एग्रीकल्चर अकेडमिया. इडीयू.

([https://www.academia.edu/14869132/Theories\\_about\\_Origin\\_of\\_Domestication\\_and\\_Agriculture](https://www.academia.edu/14869132/Theories_about_Origin_of_Domestication_and_Agriculture))

---

## 5.10 शैक्षणिक वीडियो

---

ऑरिजिन ऑफ एग्रीकल्चर

<https://www.youtube.com/watch?v=MEv-rH0e03Q>

ignou  
THE PEOPLE'S  
UNIVERSITY